

तौ तान्मणीन्यरिज्ञात्वा महावैराग्ययोग्यतः। त्यक्त्वा परिग्रहं सर्वं महाक्लेशस्य कारकम् ॥१६॥
 स्वमातृभगिनीयुक्तौ नत्वा दमधराभिधम्। मुनीन्द्रं परया भक्त्या स्वर्गमोक्षसुखप्रदम् ॥१७॥
 दीक्षामादाय जैनेन्द्रीं सुरेन्द्राद्यैः समर्चिताम्। जातौ मुनी जगत्पूज्यौ निजात्मपरतारकौ ॥१८॥
 मत्तैवं भवभूरिदुःखजनकं लोभं महापापदं मातृभ्रातृकुटुम्बवञ्चनगृहं त्यक्त्वा त्रिधा धार्मिकैः।
 श्रीमज्जैनमते जगत्त्रयहिते धर्मे सुशर्मप्रदे कर्तव्यं सुमनो दृढं प्रतिदिनं शुद्धं महाश्रेयसे ॥१९॥
 इति कथाकोशे परिग्रहाद्भयमिति कथा समाप्ता।

४०. धनाद्भीतस्य सागरदत्तस्य कथा

प्रणम्य परमात्मानं श्रीजिनं केवलेक्षणम्। जातं भयं धनाच्चेति कथयामि कथानकम् ॥१॥
 कौशाम्ब्यां धनमित्राख्यधनदत्तादयो मुदा। वाणिज्येन वणिक्पुत्रा निर्गता राजगेहकम् ॥२॥
 तत्स्करैश्च महाटव्यां पापिष्ठैस्तद्धनं हृतम्। हानिलोके विपुण्यानामुद्यमेऽपि भवेद्ध्रुवम् ॥३॥
 चौरास्तेऽपि धनार्थं च मारणार्थं परस्परम्। रात्रौ चक्रुर्विषाहारं हा कष्टं दुष्ट चेष्टितम् ॥४॥
 दस्यवस्ते तदाहारं भुक्त्वाशु प्राणनाशकम्। मृत्युं प्रापुः प्रकष्टेन क्व भवेन्पापिनां शुभम् ॥५॥

महा दुःख का कारण है, दमधर मुनि के पास दीक्षा के लिए गए। इन्हें साधु हुए देखकर इनकी माता और बहिन भी आर्यिका हो गई आगे चलकर ये दोनों भाई बड़े तपस्वी महात्मा हुए। अपना और दूसरों का संसार के दुःखों से उद्धार करना ही एक मात्र इनका कर्तव्य हो गया। स्वर्ग के देवता और प्रायः सब ही बड़े-बड़े राजा-महाराजा इनकी सेवा-पूजा करने को आने लगे ॥८-१८॥

यह लोभ संसार के दुःखों का मूल कारण और अनेक कष्टों का देने वाला है, जो माता, पिता, भाई, बहिन, बन्धु, बान्धव आदि के परस्पर में ठगने और बुरे विचारों के उत्पन्न करने की इच्छा करते हैं, उन्हें चाहिए कि वे इस पाप के बाप लोभ को मनसा, वाचा, कर्मणा छोड़कर संसार का हित करने वाले और स्वर्ग तथा मोक्ष का सुख देने वाले जिनेन्द्र भगवान् के उपदेश किए परम पवित्र धर्म में अपने मन को दृढ़ करने का यत्न करें ॥१९॥

४०. धन से डरे हुए सागरदत्त की कथा

केवलज्ञानरूपी उज्ज्वल नेत्र और तीनों लोक को देखने और जानने वाले ऐसे जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर धन के लोभ से डरकर मुनि हो जाने वाले सागरदत्त की कथा लिखी जाती है ॥१॥

किसी समय धनमित्र, धनदत्त आदि बहुत से सेठों के पुत्र व्यापार के लिए कौशाम्बी से चलकर राजगृह की ओर रवाना हुए। रास्ते में एक गहन वन में चोरों ने इन्हें लूट-लिया। इनका सब माल-असबाब छीन-छानकर वे चलते हुए। सच है, जिनके पल्ले में कुछ पुण्य नहीं होता। वे कोई भी काम करें, उन्हें नुकसान ही उठाना पड़ता है ॥२-३॥

उधर धन पाकर चोरों की नियत बिगड़ी। सब परस्पर में यह चाहने लगे कि धन मेरे ही हाथ पड़े और किसी को कुछ न मिले और इसी लालसा से एक-एक के विरुद्ध जान लेने की कोशिश करने

तेषां मध्ये वणिक्पुत्रः सुधीः सागरदत्तवाक्। रात्रिभुक्तिव्रतात्तेन न भुक्तं तद्विषान्नकम् ॥६॥
समालोक्य तदा सोपि तेषां मृत्युं विरक्तवान्। संत्यक्त्वा तद्धनं त्रेधा मुनिर्जातो जगद्धितः ॥७॥
एकेनापि जिनेन्द्रदेवकथिते नोच्चैर्व्रतेन स्वयं ज्ञात्वा संसृतिचेष्टितं च हृदये विद्युच्चलं जीवितम्।
त्यक्त्वा तच्च धनं विशिष्टचरणो ज्ञातो मुनिः शुद्धधीः स श्रीसागरदत्तवाग्गुणनिधिः कुर्यात्सतां मंगलम् ॥८॥

इति कथाकोशे धनाद्भूतस्य सागरदत्तस्य कथा समाप्ता।

४१. धनाद्भ्रमबुद्धिकुबेरदत्त-कथा

श्रीजिनं त्रिजगत्पूज्यं भारतीं भुवनोत्तमाम्। नमस्कृत्य गुरुन् भक्त्या वक्ष्ये संगकथानकम् ॥१॥
देशे मणिवते ख्याते पुरे मणिवताभिधे। राजा मणिवतो नाम्ना तद्राज्ञी पृथिवीमती ॥२॥
तत्पुत्रो मणिचन्द्राख्यः संजातो गुणसंयुतः। शूरो धीरोतिगंभीरो राजविद्याविराजितः ॥३॥
स राजा पूर्वपुण्येन कुर्वन्राज्यं निजेच्छया। संस्थितः श्रीजिनेन्द्रोक्त-धर्मकर्मपरायणः ॥४॥
दानं भक्त्या सुपात्रेषु पूजं श्रीमज्जिनेशनाम्। नित्यं परोपकारं च करोति स्म स भूपतिः ॥५॥
एकदा पृथिवीदेवी कुर्वती केशसंस्कृतिम्। मस्तके स्वपतेः केशं पलितं वीक्ष्य सा ददौ ॥६॥

लगे। रात को जब वे सब खाने को बैठे तो किसी ने भोजन में विष मिला दिया और उसे खाकर सब के सब परलोक सिधार गए। यहाँ तक कि जिसने विष मिलाया था, वह भी भ्रम से उसे खाकर मर गया। उसमें एक सागरदत्त नामक वैश्यपुत्र बच गया। वह इसलिए कि उसे रात्रि में खाने-पीने की प्रतिज्ञा थी। धन के लोभ में फँसने से एक साथ सबको मरा देखकर सागरदत्त को बड़ा वैराग्य हुआ। वह उस धन को वहीं छोड़-छोड़कर चल दिया और एक साधु के पास जाकर आप मुनि बन गया ॥४-७॥

रात्रिभुक्त्यागव्रती सागरदत्त ने संसार की सब लीलाओं को दुःख का कारण और जीवन को बिजली की तरह जानकर पलभर में नाश होने वाला सब धन वहीं पर पड़ा छोड़कर आप एक ऊँचा आचरण का धारक साधु हो गया। वह सागरदत्त मुनि आप सज्जनों का कल्याण करें ॥८॥

४१. धन के लोभ से भ्रम में पड़े कुबेरदत्त की कथा

जिनेन्द्र भगवान् को, जो कि सारे संसार द्वारा पूज्य हैं और सबसे उत्तम गिनी जाने वाली जिनवाणी तथा गुरुओं को भक्तिपूर्वक नमस्कार कर परिग्रह के सम्बन्ध की कथा लिखी जाती है ॥१॥

मणिवत देश में मणिवत नाम का एक शहर था। उसके राजा का नाम भी मणिवत था। मणिवत की रानी पृथ्वीमति थी। इसके मणिचन्द्र नाम एक पुत्र था। मणिवत विद्वान्, बुद्धिमान् और अच्छा शूरवीर था। राजकाज में उसकी बहुत अच्छी गति थी ॥२-३॥

राजा पुण्योदय से राजकाज योग्यता के साथ चलाते हुए सुख से अपना समय बिताते थे। धर्म पर उनकी पूरी श्रद्धा थी वे सुपात्रों को प्रतिदिन दान देते, भगवान् की पूजा करते और दूसरों की भलाई करने में भरसक यत्न करते। एक दिन रानी पृथ्वीमति महाराज के बालों को सँवार रही थीं कि उनकी